पंजीयन शुल्क–

- शिक्षक एवं अध्येताओं के लिए– 500/–
- शोधार्थियों के लिए 300/–
- आवास शुल्क अतिरिक्त 250/–

पंजीयन शुल्क का भुगतान केवल बैंक ऑफ इण्डिया, शाखा आनन्द नगर खण्डवा के खाता संख्याः 951910110000353, IFSC CODE– BKID0009519 में जमा करके ही किया जा सकता है।

शोध संगोष्ठी के पंजीयन हेतु गूगल की लिंक– https://forms.gle/Yo7jw3Mdph2hyjUe9 **पर जाकर पंजीयन किया जा सकता है।**

आमन्त्रित एवं चयनित शोध पत्र/आलेखों को एक पुस्तक के रुप में प्रकाशित किये जाने की योजना है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

- **शोध पत्र/आलेख का सारांश (250 से 300 शब्दों में) भेजने की अंतिम तारीख** –20 मार्च 2020
- **सम्पूर्ण शोध पत्र/आलेख (2500 से 5000 शब्दों में) भेजने की अन्तिम तारीख** –30 मार्च 2020

शोध पत्र/आलेख हिन्दी में कृतिदेव 010 फॉण्ट और अँग्रेजी में Times New Roman फॉण्ट में ही भेजें।

शोध पत्र/आलेख भेजने का पता
karmveervidyapeeth@gmail.com
seminarkarmveer@gmail.com

संरक्षक

मुख्य संरक्षकः श्री दीपक तिवारी (माननीय कुलपति, मा.च.रा.प.स.वि. भोपाल)
संरक्षकः श्री रमेश चन्द्र भण्डारी (कुलाधिसचिव, मा.च.रा.प.स.वि. भोपाल)
संरक्षकः श्री दीपेन्द्र बघेल (कुलसचिव, मा.च.रा.प.स.वि. भोपाल)

मार्गदर्शन समिति

डॉ. श्रीकान्त सिंह, विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग
डॉ. संजीव गुप्ता, विभागाध्यक्ष, संचार शोध विभाग
डॉ. पवित्र श्रीवास्तव, अधिष्ठाता अकादमिक एवं विभागाध्यक्ष विज्ञापन एवं जनसम्पर्क विभाग, डॉ. राखी तिवारी, विभागाध्यक्ष, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग
डॉ. सुनीता द्विवेदी, विभागाध्यक्ष, न्यू मीडिया और प्रौद्योगिकी विभाग
डॉ. सी.पी. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान और अनुप्रयोग विभाग
डॉ. अविनाश बाजपेई, विभागाध्यक्ष, प्रबन्धन मीडिया विभाग

आयोजन सचिव

श्री संदीप भट्ट (प्रभारी प्राचार्य, कर्मवीर विद्यापीठ, खण्डवा)

आयोजन समिति

1. श्री मनोज निवारिया (9827282829)
2. श्री प्रमोद सिन्हा (9425342710)
3. श्री कपिल देव प्रजापति (9644335553)
4. श्री अंकुर राजावत् (9424866884)
5. श्री नितिन भगोरिया (6261060658)
6. श्री राजेंद्र परसाई (9926882826)
7. श्री अभिषेक तिवारी
8. डॉ. रश्मि दीक्षित
9. श्री एम.आर. मंडलोई
10. श्री ओ.पी. चौरे

विद्यापीठ के उद्देश्य

- प्रिण्ट, इलेक्ट्रानिक, जनसम्पर्क, जनसंचार, न्यूमीडिया, कम्प्यूटर अनुप्रयोगों आदि क्षेत्रों के लिए विद्यार्थियों में आवश्यक कार्य–कुशलता विकसित करना।
- फील्ड रिपोर्टिंग, परीक्षण तथा विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- मानवीय मूल्य, संस्कृति, पर्यावरण और समाज के सम्बन्ध में पत्रकारीय दृष्टि विकसित करना।
- लिखित, मौखिक, संचार की क्षमता तथा दक्षता विकसित करना।
- पत्रकारिता की शैक्षणिक व प्रायोगिक समझ तथा कार्यकुशलता का विकास करना।
- शासकीय रिक्तियों की पूर्ति हेतु कम्प्यूटर दक्षता विकसित करना।

संचालित पाठ्यक्रम

- एम.जे. (मास्टर ऑफ जर्नलिज्म) – 2 वर्षीय
- बी.ए.एम.सी. (बैचलर ऑफ आर्ट इन मॉस कम्युनिकेशन) – 3 वर्षीय
- पी.जी.डी.सी.ए. (पोस्ट ग्रेजुएशन डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लिकेशन) – 1 वर्षीय
- डी.सी.ए. (डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लिकेशन) – 1 वर्षीय

कर्मवीर विद्यापीठ

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, परिसर खण्डवा

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

चैत्र पूर्णिमा एवं बैशाख कृष्ण प्रतिपदा, संवत् 2077
8 एवं 9 अप्रैल 2020, बुधवार–गुरूवार

आयोजन स्थल- दिव्योदय पास्टोरल सेण्टर, स्टेडियम के पास, सिविल लाइन, खण्डवा, म.प्र.

भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामः

प्रेस, साहित्य एवं सामाजिक आन्दोलनों की भूमिका

*** आयोजक ***

कर्मवीर विद्यापीठ, खण्डवा

विश्वविद्यालय का विस्तार परिसर
पं. माखनलाल चतुर्वेदी मार्ग, आनन्द नगर, खण्डवा- 450001
दूरभाष- 0733 2920525, 2248895
ईमेल- karmveervidyapeeth@gmail.com

भूमिका

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम विश्व के इतिहास में सबसे लम्बे आजादी के संघर्षों में से एक है। ब्रिटिश हुकूमत से भारत को आजाद करवाने के पवित्र काम में जहाँ एक ओर अहिंसावादी आन्दोलनकारियों, क्रान्तिकारियों, कवियों ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए सर्वस्व लगा दिया, वहीं देश में पत्रकारिता ने भी आजादी की अग्निशिखा को अनवरत प्रज्ज्वलित रखने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। देश में तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं और उनके सम्पादकों का स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महान साहित्यकार महादेवी वर्मा ने लिखा है– ''पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है।'' इस वाक्य का एक–एक शब्द स्वतन्त्रता आन्दोलन में पत्रकारों की भूमिका को रेखांकित करता जान पड़ता है।

भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और साहित्य ने सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। पं. जुगलकिशोर शुक्ल हों, पं. माखनलाल चतुर्वेदी हों या राजा राममोहन राय, गाँधी, केसरी, नेहरू जैसे अनेक स्वाधीनता सेनानियों ने पत्रकारिता और साहित्य सृजन के जरिये स्वराज्य की माँग को देशव्यापी आन्दोलन बनाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। भारत में आजादी के संघर्ष के दौर में अनेक साहित्यकारों और देश–प्रेमियों ने विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को मिशन के रूप में शुरू किया। अँग्रेज सरकार की भारत विरोधी नीतियों और आर्थिक कठिनाइयों के चलते पत्र बन्द भी होते रहे। उस दौर में बहुत से सम्पादकों को कारावास की सजाएँ भी हुईं। लेकिन न तो पत्रों के प्रकाशन रुके और न ही सम्पादकों के स्वर धीमे पड़े। आजादी के दौर के पत्रकारों और सम्पादकों के विचारों और देशप्रेम को समझने के लिए 'स्वराज्य' के सम्पादक पद के लिए प्रकाशित अग्रलिखित विज्ञापन देखना आवश्यक है। इसमें लिखा है– ''चाहिए स्वराज्य के लिए एक सम्पादक। वेतन–दो सूखी रोटियाँ, एक गिलास ठण्डा पानी और प्रत्येक सम्पादकीय के लिए दस साल जेल।'' प्रेस और साहित्य के बारे में अकबर इलाहाबादी की ये पंक्तियाँ बहुत प्रेरक हैं–

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो,
जब तोप मुक़ाबिल हो, तो अख़बार निकालो।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में साहित्य से प्रेरणा लेकर प्रेस का उद्‌भव होता है और प्रेस से अनेक सामाजिक आन्दोलन भी दिशा प्राप्त करते हैं।

भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में प्रेस, साहित्य और सामाजिक आन्दोलनों की महत्वपूर्ण संयुक्त भूमिका रही है। 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में जाने जाने वाले यशस्वी सम्पादक, साहित्यकार और स्वाधीनता संग्राम सेनानी पं. माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा प्रकाशित और सम्पादित समाचार पत्र 'कर्मवीर' को एक शताब्दी पूरी हो रही है। 'कर्मवीर' अपने सौ वर्ष पूरे कर रहा है। इस अवसर पर भारतीय पत्रकारिता, साहित्य और सामाजिक आन्दोलनों के अविस्मरणीय योगदान को केन्द्र में रखकर **''भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामः प्रेस, साहित्य एवं सामाजिक आन्दोलनों की भूमिका''** विषय पर कर्मवीर विद्यापीठ परिसर, खण्डवा में दो दिवसीय **दिनाँक 8 एवं 9 अप्रैल 2020** राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है। इस संगोष्ठी में निम्नलिखित विषयों पर **शोध पत्र/आलेख सादर आमन्त्रित हैं**–

- स्वतन्त्रता आन्दोलन में क्षेत्रीय साहित्य और प्रेस की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रीय प्रेस की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाषाई साहित्य की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में अन्तरराष्ट्रीय प्रेस की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में अन्तरराष्ट्रीय साहित्य की भूमिका।
- स्वतन्त्रता हेतु सामाजिक आन्दोलनों के सशक्तीकरण में प्रेस की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन के सशक्तीकरण में साहित्यिक प्रेस की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में पत्रकार, साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका।
- भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को दिशा प्रदान करने वाले अन्तरराष्ट्रीय पत्रकार, साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में समकालीन प्रौद्योगिकी की भूमिका।
- भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के समकालीन समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ।

खण्डवा एक नज़र में

खण्डवा का परिचय

खण्डवा जिले का आकार मुकुट जैसा दृष्टिगोचर होता है, जिसका शीर्ष पूर्व की ओर और आधार पश्चिम की ओर है। खण्डवा रामायणकालीन खाण्डव वनक्षेत्र में स्थित है। यह जिला मध्यप्रदेश राज्य के इन्दौर संभाग में है। खण्डवा जिला भोपाल सम्भाग के बैतूल और हरदा जिला से, महाराष्ट्र के अमरावती जिला से, दक्षिण में बुरहानपुर जिला से, पश्चिम में इन्दौर सम्भाग के पश्चिमी निमाड़ क्षेत्र से और उत्तर में इन्दौर सम्भाग के देवास जिला से जुड़ा है। दिग्गज अभिनेता/गायक किशोर कुमार का जन्म खण्डवा में हुआ था। उनकी याद में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला किशोर कुमार सम्मान समारोह भी देश के राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिदृश्य पर उभर कर सामने आया है। प्रसिद्ध ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग खण्डवा जिले में आता है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यहाँ पर कुल 84 तीर्थ हैं। यहाँ पर 33 कोटि देवता विराजमान हैं। इसके अतिरिक्त धूनीवाला दादाजी धाम भी खण्डवा जिले की पहचान है। खण्डवा शहर चारों दिशाओं में स्थित चार कुंडों के लिए भी जाना जाता है, जिन्हें पदमकुंड, भीमकुंड, सूरजकुंड और रामेश्वरकुंड कहा जाता है। खण्डवा के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल, नागचून तालाब, हनुमन्तिया द्वीप और इन्दिरा सागर बांध हैं।

खण्डवा पहुँच-मार्ग

सड़क मार्ग– खण्डवा बड़ौदा–बुरहानपुर (एस एच–26) द्वारा गुजरात और महाराष्ट्र राज्य से जुड़ा हुआ है। इन्दौर, इन्दौर–इच्छापुर रोड (एस एच 27) खण्डवा से जुड़ा हुआ है। यह भोपाल–पुनासा के रास्ते 260 किलोमीटर, होशंगाबाद के रास्ते से लगभग 280 किलोमीटर दूरी पर है।

रेल मार्ग– खण्डवा जंक्शन मुंबई–दिल्ली एवं मुंबई–वाराणसी व्हाया भुसावल, इटारसी मार्ग पर स्थित है। भोपाल से खण्डवा 270 किलोमीटर की दूरी पर है। मुम्बई से खण्डवा तक रेलमार्ग से दूरी लगभग 600 किलोमीटर है। नई दिल्ली से खण्डवा तक रेलमार्ग से दूरी लगभग एक हजार किलोमीटर है।

हवाई मार्ग– निकटतम हवाई अड्डा देवी अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा, इन्दौर है जो खण्डवा शहर से 140 किलोमीटर दूर है।